तर्ज : झूमो नाचो गाओ सतगुरु आएं हैं

गर सद्‌गुरु पे विश्वास है तो फिर मुक्ती है|
निरंकार का गर एहसाssssssस
निरंकार का गर एहसास हे तो फिर मुक्ती है|
गर सद्‌गुरु पे विश्वास है तो फिर मुक्ती है|२
निरंकार का गर एहसास है तो फिर मुक्ती है|२
गर सद्‌गुरु पे विश्वास है तो फिर मुक्ती है|
तो फिर मुक्ती है|२. ||धृ||

जिते जी ही शहनशाह ने तन मन धन गुरु को सौप दिया|
तन मन धन गुरु को सौप दिया|२
जिते जी ही शहनशाह ने तन मन धन गुरु को सौप दिया|
तन मन धन गुरु को सौप दियाssss|
वैसा ही३ अगर मन दास है तो फिर मुक्ती है|
वैसा ही अगर मन दास है तो फिर मुक्ती है|
निरंकार का गर एहसास है तो फिर मुक्ती है|२
गर सद्‌गुरु पे विश्वास हे तो फिर मुक्ती है|
तो फिर मुक्ती है|२. ||१||

जो करता सद्‌गुरु अच्छा है, जो करेगा वो अच्छा होगा| जो करेगा वो अच्छा होगा|२
जो करता सद्‌गुरु अच्छा है, जो करेगा वो अच्छा होगा| जो करेगा वो अच्छा होगाsssssss|
गर रजा मे, गर हुकम मे, गर हुकम मे हरपल वास है तो फिर मुक्ती है|
गर हुकम मे हरपल वास है तो फिर मुक्ती है|
निरंकार का गर एहसाsssssssssssस
निरंकार का गर एहसास हे तो फिर मुक्ती है|
गर सद्‌गुरु पे विश्वास हे तो फिर मुक्ती है|
तो फिर मुक्ती है|२. ||२||

इस ज्ञान अमोलक को पाकर, कर्मो मे फिर इसे अपनाकर,
जीवन मे फिर इसे अपनाकर|
इस ज्ञान अमोलक को पाकर, जीवन मे फिर इसे अपनाकर
जीवन मे फिर इसे अपनाकरssssssssss
गर जीवन३ मे उल्हास है तो फिर मुक्ती है|
गर जीवन मे उल्हास है तो फिर मुक्ती है|
निरंकार का गर एहसाssssssssssस
निरंकार का गर एहसास है तो फिर मुक्ती है|
गर सद्‌गुरु पे विश्वास है तो फिर मुक्ती है|
तो फिर मुक्ती है|२ ||३||

मेरे हर अच्छे बुरे करम को है कोई जो देख रहा
है कोई जो देख रहा|२
मेरे हर अच्छे बुरे करम को है कोई जो देख रहा
है कोई जो देख रहाsssssss|

इस बात का २ इस बात का गर आभास है तो फिर मुक्ती है।२
निरंकार का गर एहसाsssssssssssस
निरंकार का गर एहसास है तो फिर मुक्ती है।
गर सद्गुरु पे विश्वास है तो फिर मुक्ती है।
तो फिर मुक्ती है।. ॥४॥

ना काम क्रोध ना लोभ मोह,
ना द्वेष एहम का बंधन हो।३
ना काम क्रोध ना लोभ मोह,
ना द्वेष एहम का बंधन हो।
ना द्वेष एहम का बंधन होsssss
बेजोड़ ३ यही अरदास है तो फिर मुक्ती है।
बेजोड़ यही अरदास है तो फिर मुक्ती है।
निरंकार का गर एहसाsssssssssssस
निरंकार का गर एहसास है तो फिर मुक्ती है।
गर सद्गुरु पे विश्वास है तो फिर मुक्ती है।३ ॥५॥